भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

कार्यपत्रिका - बड़े भाई साहब -(2)

पाठ: बड़े भाई साहब	कार्यपत्रिका की तिथिः -------------
संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टिफन	तिथिः------------------------------
विद्यार्थी का नाम :----------------------	कक्षा : X ब

प्रश्नोत्तर

प्र1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी ?

उ1. कथानायक की रुचि कनकौए उड़ाने, कंकरियाँ उछालना, कागज़ की तितलियाँ बनाकर उड़ाने, चारदीवारी पर चढ़कर ऊपर-नीचे कूदने, फाटक पर सवार होकर मोटरगाड़ी का आनंद लेने तथा मित्रों के साथ मिलकर बाहर खेलने में थी ।

प्र2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे ?

उ2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल पूछते थे - कहाँ थे ?

प्र3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया ?

उ3. दूसरी बार पास होने पर छोटा भाई स्वछंद हो गया ।उसकी मनमानी और बढ़ गई और उसे अपनी तकदीर पर घमंड होने लगा कि वह चाहे पढ़े न पढ़े पास तो हो ही जाएगा। उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया ।

प्र4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे ?

उ4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे और वे नौवीं कक्षा में पढ़ते थे ।

प्र5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उ5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कापी या किताब पर इधर-उधर की व्यर्थ की बातें बार-बार लिखा करते थे या कोई चित्र बना डालते थे ।

<u>प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में)लिखिए -</u>

प्र1.छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया ?

उ1.छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय यह सोचा कि अब से वह मन लगाकर दिन-रात पढ़ेगा एवं बड़े भाई साहब को डाँटने का अवसर नहीं देगा ।परंतु खेलकूद में गहरी रुचि तथा पुस्तकों में अरुचि होने के कारण वह इसका पालन न कर सका ।

प्र2. एक दिन गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उ2. एक दिन गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उस पर टूट पड़े। उसे घमंडी कहा और आगे की पढ़ाई का डर दिखाया । दादा की गाढ़ी कमाई को यूँ ही व्यर्थ जाने देना ठीक नहीं। गुल्ली-डंडा ही खेलना है तो घर वापस चले जाने को कहा ।

प्र3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थी ?

उ3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ इसलिए दबानी पड़ती थी क्योंकि वह अपने छोटे भाई को सही राह पर चलाना चाहते थे । यदि वे स्वयं ही गलत राह पर चलेंगे तो छोटे भाई के लिए आदर्श नहीं बन पाएंगे ।यह कर्तव्य बोध उसके सिर पर था ।

प्र4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों ?

उ4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को घमंड न करने की सलाह देते थे और कहते थे कि उसे अपना अधिक समय पढ़ाई पर लगाना चाहिए और खेलकूद पर नहीं ।वे बड़े होने के कारण उसे राह पर चलाना अपना कर्तव्य समझते थे ।

प्र5. छोटे भाई ने बड़े भाई के नरम व्यवहार का क्या भरपूर फ़ायदा उठाया?

उ5. छोटे भाई ने बड़े भाई के नरम व्यवहार का भरपूर फ़ायदा उठाया। अब वह पहले से कुछ ज़्यादा ही स्वच्छंद हो गया । अधिकतम समय पतंगबाजी में ही बिताने लगा, पढ़ना-लिखना बिलकुल छोड़ दिया। अत: अपना अधिकतम समय कनकौए उड़ाने में बिताने लगा।

प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में)लिखिए -

प्र1. 'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं ?

उ1. 'बड़े भाई साहब' पाठ में लेखक ने तत्कालीन शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य करते हुए यह जताया है कि -

-इस प्रणाली में अंग्रेज़ी को अधिक महत्व दिया जाता है। सभी विषय अंग्रेज़ी में पढ़ाए जाते है ।

-यह प्रणाली व्यावहारिक नहीं है क्योंकि इसमें लिखने पर ज़्यादा ध्यान दिया जाता है।

-इस शिक्षा प्रणाली में विषयों की अधिकता होने के कारण छात्रों को खेलकूद का समय नहीं मिलता ।

- इस शिक्षा प्रणाली में इतिहास पर बल दिया जाता है और बादशाहों के नाम याद करना आसान काम नहीं है ।

-यह प्रणाली सख्त विधि को बढ़ावा देती है । छात्रों को पाठ्य सामग्री को कंठस्थ रखना

पड़ता है ।

-हम लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हैं । इस शिक्षा प्रणाली में बालकों की अपनी स्वच्छंदता नष्ट हो गई है क्योंकि सब कुछ पुस्तकीय ज्ञान पर ही आधारित है ।

प्र2. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उ2. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है ।इसलिए माँ-बाप, दादा-दादी कम पढ़-लिखकर भी अधिक ज्ञान और समझ रखते हैं। वे घर-खर्च, बीमारी और अन्य प्रबंध करने में पढ़े-लिखों से अधिक कुशल होते हैं ।हेडमास्टर सुशिक्षित होने के बावजूद भी अव्यवस्थित थे, उनकी बूढ़ी माँ को घर का सारा प्रबंध अपने हाथ में लेना पड़ा ।

प्र3. छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उ3. बड़े भाई साहब बार-बार फ़ेल होने के बावजूद छोटे भाई की भलाई के लिए उसे खूब डाँटते-फटकारते रहते थे । बड़े भाई साहब ने बड़े प्रेम से समझाया कि जीवन की समझ केवल दरजा पास कर लेने से नहीं बल्कि अनुभव से आती है ।उन्होंने अपने दादा(पिता) माँ और हेडमास्टर साहब की अनपढ़ माँ का उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि वे पढ़े-लिखे नहीं थे परंतु दुनियादारी की अधिक समझ रखनेवाले थे ।बड़ा होने के कारण उन्हें पूरा अधिकार है कि वे अपने छोटे भाई का ध्यान रखें और उसे बेराह न चलने दें ।इन सब कारणों से छोटे भाई का मन अपने बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा से भर गया ।

प्र4. बड़े भाई का स्वभावगत विशेषताएँ बताइए ?

उ4. बड़े भाई साहब किताबों में सिर गड़ाए रखने को ही अध्ययनशील होना समझते थे । वे हर समय पढ़ते रहते थे, यहाँ तक कि कभी खेलने तक न जाते थे । बड़े भाई होने का कर्तव्य पूरी तन्मयता से निभाते थे और छोटे भाई का पूरा ध्यान रखते थे । वे लगती बातें कहने और सूक्ति बाण चलाने में निपुण थे । छोटे भाई को हमेशा सलाह देते रहते थे कि खेलकूद में समय न गँवाकर पढ़ाई में ध्यान लगाए।वे बहुत अच्छे उपदेशक भी थे। उन्हें अपने छोटे भाई को समझाना आता था ।

प्र5. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्तवपूर्ण कहा है ?

उ5. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से ज़िंदगी के अनुभव को अधिक महत्तवपूर्ण माना है।उनके अनुसार, अनुभव से ही जीवन की सही समझ विकसित होती है । उसी से जीवन के सारे महत्तवपूर्ण काम सधते हैं ।बीमार हो, घर-खर्च चलाना हो या घर के अन्य प्रबंध करने हो, इसमें उम्र और अनुभव काम आता है, पढ़ाई-लिखाई नहीं । लेखक की अम्माँ, दादा और हेडमास्टर साहब की बूढ़ी माँ के उदाहरण सामने हैं । वहाँ उम्र और अनुभव काम आते हैं, पढ़ाई-लिखाई नहीं ।